Poonam Shodh Rachna(ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed and Refereed Research Journal)
Vol. 3, Issue.V, May 2024, PSR-2405010

शिक्षित कामकाजी दांपत्य : जेंडर ध्रुवीकरण से परे समानांतर संबंधों की ओर

नीतू यादव, शोधछात्रा (पी. एच. डी.)
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग
दिल्ली, विश्वविद्यालय
ई.मेल - ny2011education@gmail.com

प्रस्तावना एवं पृष्ठभूमि

आरंभिक समाज संरचनात्मक व्यवस्था में स्त्री-पुरुष कार्य एवं जीवन यह सभी लैंगिक रूप से विभाजित रूप में स्वीकृत थे। जिसके तहत स्त्री घरेलू एवं पुरुष बाहर कामकाजी जीवनयापन में अर्न्तनिर्भर रूप में अलग-अलग भूमिका के तौर पर क्रियाशील रहे (एंजेल्स,1902)। लेकिन कालांतर में हुए औद्योगीकरण,शिक्षा, समाज- सांस्कृतिक परिवर्तनों, नारीवादी चेतना, वैश्वीकरण आदि की प्रक्रिया ने इन उपरोक्त स्पष्ट संरचनात्मक व्यवस्था के स्वरूप को प्रभावित व परिवर्तित करने का कार्य किया। जिसके फलस्वरूप शैक्षिक- आर्थिक सशक्तीकरण से स्त्री जीवन-अनुभवों, दायित्वों और भूमिकाओं के स्वरूप में बदलाव आने आरंभ हुए, और स्त्री ने घरेलू परिवेश से इतर बाह्य परिवेश में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करायी(अब्बोट एवं वलैस,2005; ब्रेंनन, 2017;कबीर, 1999) । चूंकि शिक्षा, किसी भी अन्य उपलब्धि (जैसे - व्यावसायिक) को प्राप्त करने का पहला माध्यम और व्यक्ति विशेष के उत्थान में सहायक होती है, साथ ही इसे सामाजिक रूपांतरण के महत्वपूर्ण कारक के तौर पर देखा जाता है(बयूटेल एवं औक्सीन,2002)। इसी कारण जब भी जेंडर संबंधी सशक्तीकरण की बात उपजी तब इसे सबसे पहले शैक्षिक अवसरों और अधिकारों की संस्तुति के तौर पर स्वीकार किया गया। जिसके द्वारा कालांतर में स्त्री ने घरेलु भूमिकाओं से अलग समाज के प्रत्येक क्षेत्र में, स्वयं की प्रतिभा से अपनी नवीन जेंडर अस्मिताएं सृजित की हैं। जिनसे उनके स्वयं के जीवन अनुभवों, भूमिका और साथ ही दुविधाओं के स्वरूप भी बदले हैं, जिसने तयशुदा परंपरागत समाज संरचनात्मक व्यवस्था को भी प्रभावित व परिवर्तित किया है। जिनकी प्रचुर व्याख्याएं और प्रमाण विभिन्न शोध संदर्भों और नारीवादी साहित्यिक में मिलते हैं(कार्नवाल,2014; डेल्मोंत, 2001; कबीर,1999)। पर शिक्षा व अवसरों की समानता ने केवल नारी जीवन अनुभवों, दुविधाओं और अस्मिताओं को ही प्रभावित या रूपांतरित नहीं किया है, बल्कि अंतर्क्रियात्मक समाज में इसके सापेक्ष अन्य समाज-सांस्कृतिक व व्यक्तिगत बदलाव भी आए हैं जिन्हें समझने की नितांत आवश्यकता है।

समस्या का स्वरूप-

अतः उपरोक्त विवेचना के संदर्भ में विगत कुछ दशकों से प्रचलित पुरुष केन्द्रित अध्ययनों ने विभिन्न शोध - परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट किया है, कि बढ़ती शैक्षिक-आर्थिक दरों ने जहाँ स्त्री - जीवन अनुभवों व अस्मिता को रूपांतरित किया है, वहीं इसके सापेक्ष ही गत्यात्मक रूप से समाज में पुरुषों की भूमिकाओं, अनुभवों दृष्टिकोण व मानसिकता में भी बदलाव आए हैं। जिसके कारण एक परंपरागत रूप से प्रशिक्षित 'पुरुषत्व' से अलग वह नए, रूपांतरित भूमिकाओं में दिखाई दे रहा है(किमेल ,1987; कोल्ट्रेन,1996; स्वीटमैन,2000; होश्चाल्ड,2003)। जैसा कि पुरुष अध्ययनों हेतु प्रसिद्ध माइकेल एस. किमेल (1987) एवं कोल्ट्रेन (1996) आदि पाश्चात्य समाजशास्त्री इस बात पर पूरा जोर देते हैं कि, कालान्तर में स्त्री-जीवन और अस्मिताओं में आए परिवर्तन ने पुरुष को भी बदलने का कार्य किया है(किमेल ,1987; कोल्ट्रेन ,1996), लेकिन इन दावों से अलग सारा डेल्मॉ(2001) इन्हीं परिवर्तनों के संबंध में स्पष्ट करतीं है कि यह सही है कि स्त्री के सापेक्ष पुरुषों में भी बदलाव आए हैं, पर अब भी वह इस परिवर्तन में स्त्री से काफी पीछे है, और उसका यह परिवर्तन यथार्थ होने की बजाय समझौतापूर्ण और राजनैतिक अधिक प्रतीत होता है(डेल्मॉ, 2001) । अत: उपरोक्त वाद-विवाद के संबंध में प्रस्तुत शोधकार्य, विकासशील भारतीय समाज सांस्कृतिक संदर्भ में सतत् रूप से परिवर्तित होते 'जेंडर अस्मिता'

को सापेक्षिक और गत्यात्मक रूप में यह जानने का प्रयत्न है कि, समाज सांस्कृतिक व शैक्षिक प्रभावों के फलस्वरूप स्त्री-पुरुष जेंडर अस्मिताएं किस प्रकार पुर्ननिर्मित व सृजित हो रहीं हैं? इसमें स्त्री और सापेक्षिक रूप से पुरुषों का जीवन, उनके अनुभव, दुविधा, घरेलू कार्यक्षेत्र संबंधी अस्मिताएं कितनी रूपांतरित हुई हैं? दोनों कितने समतामूलक संबंधों को व्यक्त करते और अस्मिताओं को पुनर्संगठित करते हैं? और अंत में सबसे महत्त्वपूर्ण यह कि शिक्षा और समाज- सांस्कृतिक परिवेश ने अन्य सापेक्षिक संबंधों (घर-परिवार, समाज व पीढ़ी आदि) को किस तरह प्रभावित किया है ?

अवधारणात्मक रूपरेखा-

शोध अध्ययन के लिए किसी विशिष्ट अस्मिता सिद्धांत के बजाय मनोसामाजिक एवं जैविक सभी अस्मिता सिद्धांतों को एक समेकित अवधारणा के रूप में प्रयुक्त किया गया है। क्योंकि आरंभिक अस्मिता सिद्धांतों में जहाँ इसे मनोवैज्ञानिक, जैविक और सामाजिक संदर्भों के विभाजित विशिष्ट स्वरूप में देखने का प्रचलन रहा (टर्नर,2014), वहीं नवीन अस्मिता सिद्धांतकार जीवन - अनुभवों के संदर्भ में अस्मिता ,फलस्वरूप जेंडर अस्मिता को भी इनके समेकित, समानांतर और गत्यात्मक रूप में देखने की संस्तुति करते हैं (टर्नर,2014; ब्रेंनन,2017)। क्योंकि किसी के भी जीवन अनुभव इन सबके (मनो, समाज एवं जैविक) सम्मिश्र होते हैं, इन्हें पृथक रूप में खण्डित कर विवेचना नहीं की जा सकती। अतः प्रस्तुत शोधकार्य हेतु 'जैव समाज सिद्धांत' (मनी एवं एर्हार्ट ,1972), अस्मिता के समाजशास्त्रीय 'अंर्तक्रियात्मक सिद्धांतों' (मीड से लेकर आधुनिक टर्नर तक; टर्नर ,2014) और मनोवैज्ञानिक संदर्भों में आधुनिक 'एक्सपेंसियनिस्ट थियरी' (बारनेट एवं हाइड,2001; ब्रैनन,2017), को प्रमुखतः अवधारणात्मक रूपरेखा के तौर पर सम्मिलित किया गया। जिससे परिवर्तित होते समाज सांस्कृतिक व शैक्षिक परिवेश में कामकाजी दंपतियों की गत्यात्मक रूप से पुर्नसृजित होती जेंडर अस्मिता को सापेक्षिक रूप से समझा जा सके। जैसा कि दादा धर्माधिकारी (2003) भारतीय पुरातन संस्कृति के विश्लेषणात्मक विवेचना के आधार पर यह स्पष्ट करते हैं कि यह आवश्यक नहीं है कि, स्त्री और पुरुष को दो अलग-अलग ध्रुवीय खांचों में रखकर ही विवेचना की जाए। बल्कि, इन्हें समाज के दो सबसे महत्वपूर्ण अवयवों के तौर पर सापेक्षिक-समानांतर और 'समन्यवयात्मक' रूप में विवेचित किये जाने की आवश्यकता है(धर्माधिकारी ,2003) । जो 'अर्द्धनारीश्वर' स्वरूप में पुरुषत्व समेटे स्त्री और स्त्रीत्व से पूर्ण पुरुषत्व का संतुलित स्वरूप भी हो सकते हैं, जो एक दूसरे के पूरक रूप में कार्यशील हैं(धर्माधिकारी ,2003)। अतः अध्ययन हेतु जेंडर - अस्मिता के मनोसमाज सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के समेकित स्वरूप को ही प्रयुक्त किया गया है, जिनसे समस्त जीवन अनुभवों को आत्म वृत्तांतो(नैरेटिव)के रूप में यथार्थतः वर्णित किया जा सके।

Poonam Shodh Rachna

शोध उद्देश्य-

अध्ययन हेतु अग्रवत शोध उद्देश्य निर्धारित किये गए-

1. स्त्री पुरुष के आरंभिक पारिवारिक व सामाजिक पृष्ठभूमि में विनिर्मित होती जेंडर अस्मिताओं के स्वरूप का अध्ययन करना.
2. कामकाजी दंपती के रूप में वर्तमान दैनिक जीवन अनुभवों में पुनर्सृजित होती जेंडर अस्मिता का अध्ययन करना.
3. कामकाजी दंपतियों की सापेक्षिक संबंधों से आकार लेती जेंडर अस्मिताओं के सामानांतर स्वरुप को समझना.
4. विनिर्मित होती जेंडर अस्मिताओं से प्रभावित होते तात्कालिक संदर्भों का अध्ययन करना।

प्रविधिशास्त्र

प्रस्तुत गुणात्मक शोध के अंतर्गत केस अध्ययन विधि द्वारा जीवन अनुभवों के संकलन हेतु आत्मवृत्तांतों (नैरेटिव) के संकलन की प्रविधिशास्त्रीय उपागम को चयनित किया गया। जिसके लिए दिल्ली राज्य राजधानी क्षेत्र के विविध सेवा क्षेत्रों के कुल दस वयस्क (35 वर्ष के उपर), मध्यमवर्गीय ,कामकाजी, शिक्षित दंपतियों का सोद्देश्य चयन किया गया। जिनके प्रत्यक्ष साक्षात्कार द्वारा आत्मवृत्तांतों(नैरेटिव) के संकलन हेतु एक वैध थीम आधारित प्रश्नावली (उपकरण) का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार से प्राप्त

आत्मवृत्तांतों के केसवार एवं समग्र विश्लेषणात्मक अध्ययन से कुछ प्रमुख प्रभावी विषयबिंदु (थीम) प्राप्त हुए, जिनको तात्कालिक उपलब्ध शोध- साहित्य संदर्भों से संबंधित रूप में विश्लेषित कर परिणाम एवं निष्कर्षों की व्याख्या की गई।

विश्लेषण एवं व्याख्या: प्रमुख उदीयमान विषय बिंदु (थीम) –

समस्त केसों के गहन विश्लेषणात्मक व्याख्या में निम्नवत मुख्य विषयबिंदु प्रभावी रूप में प्राप्त हुए।

1. आरंभिक समाज सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में सृजित होती जेंडर अस्मिताएं-

केसों के विवरणात्मक अध्ययन में यह प्रभावी रूप से पाया गया कि निःसंदेह तीन दशक पूर्व तक इस पीढ़ी के आरंभिक परिवार ,सामाजीकरण व समाज- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में परंपरागत जेंडर - विभाजित भूमिकाएं, व्यवहार व मनोवृत्ति प्रभावी रूप में व्याप्त थीं, जिनके अनुरूप ही इनके स्त्री एवं पुरुष संबंधी जेंडर अस्मिताएं निर्मिती के लक्षण मिलते हैं। जिनके कारण ये स्त्रीत्व व पुरुषत्व संबंधी पृथक प्रशिक्षण अनुभव व्यक्त करते हैं-

'...मां घर के काम देखती थी... पापा बाहर का सारा काम करते... वैसे ही पढ़ाई तो सबको करना जरूरी था... पर घर पर भाई - बहन के काम भी ऐसे ही बंटे थे... दीदी घर के कामों में हाथ बंटाती .... तो हम भाइयों को बाहर के काम दिए जाते... '(मिथिलेश ,38,स्कूल शिक्षक)

हालांकि उस दौर में भी कुछ परिवार या माता - पिता के व्यवहारों में लचीलापन भी देखा जा सकता है, जिसके प्रभाव से तात्कालिक पीढ़ी पर नियंत्रण या स्वतंत्रता के आशयों ने इनमें रूढ़िवादी भूमिका या अस्मिता से अलग एक संतुलित, उदारवादी अस्मिता सृजन में सहायता की है।

...उस छोटे से गांव में सब लोगों से अलग हमारे मम्मी-पापा हम बहनों को केवल पढ़ने के लिए कहते.. उन्होंने कभी घर के काम करने का या सीखने का दबाव नहीं बनाया... (डॉ. कीर्ती ,40, गायनी, एल.एन.जे.पी.) ।

"... सच कहूँ मेरे घर में मेरी दीदीयों को ज्यादा प्रिविलेज मिली (हंसकर) .. .. लाने बाइक गए थे.. स्कूटी पर कहानी खत्म हुई" (डॉ. अनूप, 42, फिजीशियन' प्राइवेट)

(2) कामकाजी वैवाहिक दांपत्य से पुर्नसृजित होती जेंडर - अस्मिताएं : स्त्रीत्व व पुरुषत्व के गढ़ते नवीन आशय व अवधारणाएं-

समस्त केस अध्ययनों के विश्लेषण में विविध शोध अनुरूप ही यह पाया गया कि, यद्यपि आरंभिक जीवन पृष्ठभूमि में स्त्री-पुरुष जेंडर अस्मिताएं पृथक और परंपरागत स्वरूप में विकसित हुई , पर तात्कालिक वर्तमान कामकाजी दांपत्य ने न केवल स्त्री बल्कि पुरुष भूमिका, दायित्वों, व्यवहार व मनोवृत्ति को भी रूपांतरित और पुर्ननिर्मित करने का कार्य किया है। जिसमें स्त्री, पुरुषत्व संबंधी भूमिकाएं और पुरुष, स्त्रीत्व प्रमुख भूमिका व व्यवहार का निर्वहन करते दिख रहे हैं। यानि जहाँ स्त्री प्रबुद्ध, आजीविका अर्जित करने वाली, आत्मनिर्भर व्यक्तित्व बनकर उभरी है, वहीं पुरुष सापेक्षिक रूप में घरेलू कार्य संभालने वाला, बच्चों की देखभाल में सहभागी व्यक्तित्व के रूप में उभरा है।

"... जब दोनों काम करेंगे तो... फिर मैनेज तो करना पड़ेगा... अब इनकी (बाइफ) ड्यूटी ही सुबह की है.. तो वो 7 बजे निकल जाती हैं... फिर बच्चोंके स्कूल का टाइम होता है तब पीछे मुझे ही संभालना होता है... इन्हें स्कूल भेजकर, घर का काम निपटाकर एक बजे तक मैं अपने स्कूल के लिए चला जाता हूँ।... वापस आते हुए 2:30 ये (पत्नी) बच्चों को ले आतीं है फिर ये देखती हैं... शाम को लौटते वक्त घर के लिए सब्जी सामान भी ले आता हूँ... " (मिथिलेश , 38 , स्कूल शिक्षक, दिल्ली)

" एम.एन.सी. की जॉब काफी रिजिड होती है... तो वहाँ आपको अपना 100% ही देना जरूरी होता है... ऐसे में पीछे ये (पति) वक्त दे देते है..." (चेष्टा,35,एम् एन सी ऑफिस क्लर्क)

इस तरह दोनों ही(पति- पत्नी) जेंडर और इससे संबंधित स्पष्ट भेद को धुंधला करते दिख रहे हैं, और नवीन जेंडर अस्मिता व आशयों की विनिर्मिती की ओर अग्रसर हुए हैं।

(3) गत्यात्मक जीवन संबंध व कामकाजी दंपती- समतामूलक संबंधों की ओर

अध्ययन में दंपतियों से समानता, स्वतंत्रता, कार्य , व्यवसाय और शिक्षा जैसे मुद्दों पर चर्चा में यह पाया गया कि शैक्षिक-आर्थिक समानता और साथ ने स्त्री-पुरुष दोनों को ही 'समतामूलक' संबंधोंकी ओर अग्रसर किया है, जो बिना किसी हस्तक्षेप परस्पर आगे बढ़ने में सहायक , साथी और पूरक बनकर उभरे हैं। और एक-दूसरे की निजता का सम्मान करते दिखते हैं, उसे नियंत्रित नहीं।

"रोक-टोक का कोई रीजन (कारण) ही नहीं है... एक स्पेस हम सबको चाहिए ... फिर चाहे वो हाउस वाइफ ही क्यों न हो... हाँ, दोनों एक दूसरे को इस तरह से इन्फॉर्म करके चलते हैं कि कोई परेशानी न हो... तो ये फिक्र है..'कंट्रोल' नहीं" (अशोक, 38, बैंक कर्मचारी)

"स्वतंत्रता है पर वाइल्डनेस (स्वच्छंदता)नहीं... एक संतुलन होना चाहिए ...अधीनता न हो" (डॉ. अनूप, 42, फिजीशियन, प्राइवेट)

... कई बार सेम प्रोफेशन का फायदा भी मिलता है (हंसकर)... मैं तो इनके पी. जी. टी. होने का पूरा फायदा उठाती हूँ... प्रोफेशनली काफी हेल्प मिलती है ..और हाउसहेल्प में तो साथ हैं ही(हंसकर), (रीता मीणा, टी.जी.टी. दिल्ली) .

इस तरह से ये नवीन दांपत्य संबंधों की परिभाषाएं पुर्नसृजित करते दिखते हैं। जिसमें स्त्रीत्व या पुरुषत्व संबंधी भेद सीमित और ज्यादा मैत्रीपूर्ण होते प्रतीत होते हैं।

4. सृजित होती नवीन जेंडर अस्मिता: अन्य समानांतर प्रभाव

अध्ययन में स्त्री-पुरुष जेंडर अस्मिताओं की गत्यात्मक विनिर्मिती संबंधी अध्ययन के प्रत्येक विमर्श के मूल में 'शिक्षा' की भूमिका बेहद प्रमुख रूप में पाई गई, जिनसे न केवल व्यावसायिक आत्मनिर्भरता उपजी है, बल्कि परोक्षत: इसने समाज और सांस्कृतिक तौर पर मानसिकता को भी बदलने में मुख्य भूमिका निभाई है। जिसके कारण जहाँ एक शिक्षित स्त्री के कामकाजी और आत्मनिर्भरता को समाजिक-पारिवारिक स्वीकृति मिल रही है, वहीं दूसरी तरफ पुरुषों की घरेलू स्तर पर (साफ सफाई, खाना बनाना, बच्चों की देखभाल, कपड़े धोना आदि) सहभागिता को भी सराहने के प्रयास हो रहे हैं। जिनसे दोनों ही के मनोबल संयुक्त, सापेक्षिक रूप से बढ़े है, और जेंडर संबंधी भेद न्यून होते दिख रहे हैं।

"बच्चे तो समझदार हुए ही हैं... अब मां-पापा भी कहते हैं... थोड़ा उसे भी समय और आराम दो... मां कई बार काम से लौटकर आने पर हम सबकी चाय बनाकर भी पिलाती हैं .... और पीछे बच्चों का भी ख्याल रखते हैं... बदलाव तो आए हैं... (बिल्कुल) थोड़े ही सही... पर शिक्षा से स्वीकृति व सहजता भी बढ़ी है..." (सरिता, 35, ऑफिस क्लर्क, दिल्ली)

"... घर के काम करते वक्त मुझे कभी नहीं लगता - अरे कोई देखेगा तो क्या कहेगा.... अलबत्ता पड़ोसी, मित्र कई बार कहते हैं.. भाई हमारे घर में झगड़े हो जाएंगे.... (हंसते हैं)... इतना मत किया करो... तो एक्सेपटेन्स बढ़ी है समाज में नो डाउट... " (अशोक,38, बैंक कर्मचारी)

परिणाम व निष्कर्ष-

उपरोक्त विश्लेषणात्मक विवेचना में यह प्रभावी तौर पर पाया गया कि पारिवारिक सामाजिक जेंडर व्यवस्थाएं निश्चित रूप से आरंभिक जेंडर स्वरूप को प्रशिक्षित करने व गढ़ने का कार्य जरूर करतीं हैं, लेकिन उनमें निहित लचीलापन वयस्कावस्था में परिस्थितिनुसार परिवर्तन और अनुकूलन में सहायक होता है (फेकनर,2013; ब्रेनन, 2017)। इस प्रकार, विभिन्न सिद्धांतों और शोध के संदर्भ में परिणाम स्वरूप यह पाया गया कि आरंभिक जीवन और परिवेश में हुए सामाजीकरण और ग्रहण किए गए भूमिकाएं निश्चित ही जेंडर - अस्मिता विनिर्मिती में मुख्य भूमिका निभाती हैं (कार्टर ,2014; टर्नर,2014; फेनकर, 2013)। लेकिन आगे वयस्कावस्था में समय - संदर्भ व परिस्थितिनुरूप इनमें सतत रूप से परिवर्तन भी होते रहते हैं, जो गत्यात्मक रूप में अस्मिताओं को पुर्नसृजित करने का कार्य करते हैं (फेकनर,2013;, कार्टर,2014) .इनके अलावा पाश्चात्य शोध परिणामों के अनुरूप ही, भारतीय

सन्दर्भ में भी कामकाजी दांपत्य के बढ़ते चलन से स्त्री-पुरुष अस्मिताएं अलग-अलग पर सापेक्षिक रूप से निरंतर आकार ले रही हैं, जिसने दोनों ही नए भूमिका, तनाव, दुविधाओं और सामंजस्य से दो चार हों रहे हैं । जिसके चलते जहाँ स्त्री, कार्यक्षेत्र में अपनी उपलब्धियों और धनोपार्जन से नवीन अस्मिताएं रच रही है, वहीं पुरुष ने भी इससे लाभान्वित रूप में घरेलू स्तर पर अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज करायी है (ब्रेनन ,2017;स्कॉट ,1996 ;होश्चैल्ड ,2003; एन्गेले ,2000; किमेल,1987)। इस तरह दोनों विस्तारवादी सिद्धान्त अनुरूप अन्योन्य रूप से लाभान्वित होते हुए आगे बढ़ रहे हैं (बारनेत एवं हाइड,2001)

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्त्री या पुरुष जेंडर अस्मिताएं सदैव ही सापेक्षिक- अर्न्तक्रियात्मक रूप में विनिर्मित होती हैं। जिन्हें अलग-अलग विवेचना के स्थान पर यदि अर्न्तसम्बन्धित रूप में व्याख्या की जाए तो ज्यादा स्पष्ट व्याख्याएं की जा सकती है। क्योंकि व्यक्ति विशेष के जीवन अनुभवों में मात्र उसके निजी ही नहीं उसके व्यवहार, समाज, संस्कृति, शिक्षा, अन्य व्यक्तियों, परिवेश व परिस्थितियाँ यह सभी जटिलता से अंर्तक्रियात्मक रूप में उसके अस्मिताओं को प्रभावित व पुर्नसृजित करने का कार्य करती हैं,(टर्नर,2014)।अतः जरूरी है, कि इन्हें अन्योन्याश्रित व सापेक्षिक रूप में ही विवेचित किया जाए न कि पृथक रूप में।) अत: बदलते समाज सांस्कृतिक परिवेश में स्त्री-पुरुष को अलग-अलग 'जेंडर' व्यक्तित्व के बजाय एक सापेक्षिक लेंस से देखने की आवश्यकता है जहाँ वे 'साथी' और 'पूरक' (धर्माधिकारी, 2003) बनकर उभरे हैं और स्त्रीत्व व पुरुषत्व के गुणों को सम्मिश्रित रूप में स्वीकृत कर आगे बढ़े हैं। तभी गत्यात्मक रूप से विनिर्मित होती जेंडर अस्मिताओं को ध्रुवीकरण से परे समानांतर रूप में विवेचित किया जा सकेगा।

सन्दर्भ (Refrences)

- Abbot, P. & Wallace, C. (2005). *An Introduction to Sociology : Feminist Perspectives*. London : Routledge.
- Barnett, R.C. & Hyde, J. (2001). Women, Men, Works and Family : An Expansionist Theory. *American Psychologist 56*(10):781-96. https://www.researchgate.net/.
- Batliwala, S. (1993). *Empowerment of Women in South Asia : Concept and Practices*. Mumbai : Asian South Pacific Bureau of Adult Education.
- Beutel, A.M. & Axinn, W.G. (2002). Gender, Social Change and Educational attainment. *Economic Development and Cultural Change, 51*(1) : 109-34 DOI : 10.1086/345517
- Brannon. L. (2017). *Gender : Psychological Perspectives*. New York : Routledge.
- Carter, M.J. (2014). Gender, Socialization and Identity Theory. *Social Sciences*. https://www.researchgate.net/publication295398445
- Coltrane, Scott (1996). *Family man : Fatherhood, Housework and Gender Equity.* New York : Oxford.
- Cornwall, A. (2014). Women's Empowerment : What Works and Why? DOI : 10.35188/UNO-WIDER/2014/825-4.
- Cornwall, Andrea (2000). Men Masculinity and Gender in Development. In C. Sweetman(Ed.), *Men and Masculinity*. UK : Oxfam.

- Delmont, S. (2001). *Changing Women, Unchanged Man? Sociological Perspectives on Gender in a Post-Industrial Society*. Philadelphia : Open University Press.
- Dharmadhikari, D. (2003*). Beyond Gender Games : A Fellowship of Women and Men.* S.S. Pandharipade (Trans.) Mumbai : Popular Prakashan.
- Engels, Fredrick (1902). The Origin of the Family, Private Property and the State. Ernest Umtermann (Trans.). Chicago : Charles H. Kerr & Company.
- Engle, P.L. (2000). The Role of Men in Families : Achieving Gender Equity and Supporting Children. In C. Sweetman(Ed.), *Men and Masculinity*. UK : Oxfam.
- Felker-Lara-Paraz (2013). Socialization: Early to Lifespan Concept. In J.Deliameter & A.Wards(Eds.).*Handbook of Social Psychology (2nd ed.).* NY:Springer pub.
- Hochschild, A.R. (2003). *The Second Shift. London* : Penguin Books.
- Kabeer, N. (1999). Resources, Agency, Achievements, reflections on the measurement of Women's Empowerment. *Development and Change, 30*(3): 435-64.
- Money, J. & Ehrhardt, A.A. (1972). *Man & Women, Boy & Girl : The Differentiation and Dimorphism of Gender Identity from Conception to Maturity.* Baltimore, Maryland : John Hopkins University Press.
- Sweetman, Caroline (Ed.) (2000). *Men and Masculinity.* UK : Oxfam.
- Turner, J.H. (2014). *Theoretical Sociology : A Concise Introduction to Twelve Sociological Theorie*s. London : SAGE.

Poonam Shodh Rachna